Global Journal of Multidisciplinary Studies Available online at www.gjms.co.in
Volume 3, Issue3, Feb 2014
ISSN:- 2348-0459

एक विश्लेषणात्मक अध्ययन भारतीय अद्योंगों के सार्वजनिक क्षेत्र की बौध्दिक पूंजी का प्रदर्शन

डॉ. सीमा पटारिया

असिस्टेंट प्रोफेसर शासकीय वाणिज्य स्नातकोत्तर महाविद्यालय सिवनी मध्य प्रदेश

सारांश

बौद्धिक पूंजी उद्योंगों का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष है बौद्धिक पूंजी का प्रबंधन करना प्रभावी रूप से उद्योंगों के प्रतियोगी लाभ को बढ़ा सके है। ऐसे उद्योंगों की प्रतिस्पर्धात्मकता की मजबूत बनाने के लिए इस अध्ययन पर ध्यान केन्द्रित किया गया है। जो इस शोध के प्रदर्शन को मापने के लिए उपन्यास मूल्यांकन माडल स्थापित किया गया है। भारतीय सावजनिक क्षेत्र में चयनित 50 कम्पनियों के कुल उद्योग और अनुभव जन्य नमूने के रूप में चुने गये है परिणाम दिखाते हैं कि भारतीय क्षेत्र के लिए बेंच मार्किन उद्यम सबसे अच्छी कम्पनी परिचालन प्रदर्शन और उत्पाकता दोनों में चुना जाता है। इस मॉडल के साथ – साथ बौद्धिक पूंजो न्याय करने के लिए एक आकलन मॉडल प्रदर्शित करता है।

खोज शब्द – मूल्यांकन, पूंजी, प्रतियोगी

प्रस्तावना

परिणाम दिखाते हैं कि इस उपन्यास मूल्यांकन पद्धति वास्तव में रिश्तेदार फायदे की पहचान करने और भारतीय सार्वजनिक क्षेत्र के लिए बेंच मार्किन उद्यम सबसे अच्छी कंपनी परिचालन प्रदर्शन और उत्पादकता दानों में चुना जाता है। सुधार इस मॉडल के साथ–साथ बौद्धिक पूंजी न्याय करने के लिए एक प्रदर्शन का आकलन मॉडल है। वित्तीय पूंजी कीवर्ड बौद्धिक पूंजी, ज्ञान प्रबंधन, भारतीय पब्लिक सेक्टर इंटरप्राइजेज, डाटा लपेटना विश्लेषण, ग्रे संबंधपरक विश्लेषण, इंसउुनपेज उत्पादकता सूचकांक आदि।

परिचयः 1945 में द्वितीय विश्व युद्ध के अंत तक, यूरोप में सबसे अधिक कृषि को आधारित अर्थवयवस्थाओं में तब्दील किया गया था। वित्तीय और भौतिक पूँजी के लिए भूमि और श्रम, आज विश्व अर्थव्यवस्था से आगे बढ़ रहा है। ज्ञान आधारित आर्थिक गतिविधि की और विनिर्माण (1993) इंगित करता है कि ज्ञान, श्रम भूमि के लिए बेहतर है और उत्पादन का केवल सार्थक कारक है। उन्होने कहा कि 20वीं सदी में प्रबंधन का अद्वितीय योगदान था। कहते है कि श्रम प्रधान के रूपांतरण के माध्यम से श्रमिक को उत्पादकता में वृद्धि कई गुना हुई। विनिर्माण करके अर्थव्यवस्था और श्रम अर्थव्यवस्था ने 21वीं सदी में प्रबंधन के लिए योगदान दिया है। ज्ञान कार्यकर्ता की उत्पादकता में वृद्धि और उपकरणों के उत्पादन से एक पारी ज्ञान काम करने के लिए, कई कम्पनियों और यहां तक कि देशों के लिये रणनीति की योजना बना रहे है। यही कारण है कि उभरती ज्ञान अर्थव्यवस्था में खुद को रखते हुए वर्तमान युग में ज्ञान, अर्थव्यवस्था में व्यापार संसाधन 20ः मुर्त संपति शामिल की है और 80ः कर रहे है ताकि कम्पनी के प्रदर्शन मापन प्रणाली विनिर्माण युग और भारी कमी वित्तीय और भौतिक पहलुओं की ओर झुका रहे है। बौद्धिक पूंजी या ज्ञान के प्रदर्शन पर प्रासंगिक जानकारी प्राप्त करने के लिए निगरानी आपरेशन के अलग–अलग तरीकों से अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करने की जरूरत है।

कम्पनियों के अमूर्त संसाधनों से उत्पादकता, परिभाषित करने के लिए कई प्रयास हो चुके है। उवधि (आईसी) और मेलोन (1997) में परिवर्तित किया जा सकता है कि ज्ञान के रूप में कहा मूल्य कई देशों में प्रचलन में है। आर्थिक प्रबंधकों का मानना है कि उत्पादन आधारित परिवर्तन की गति बनाए रखने के लिए ऐसा कर रहे है। तो सान आधारित अर्थव्यवस्था के लिए अर्थव्यवस्थाएं

Global Journal of Multidisciplinary Studies Available online at www.gjms.co.in
Volume 3, Issue3, Feb 2014
ISSN:- 2348-0459

अपरिहार्य है। आर्थिक विकास च्नइसपब (2000) के अनुसार प्ब ट व्यापार की सफलता के लिए एक चलित बल है। ज्ञान अर्थव्यवस्था की चुनौतियों को तैयार करने के लिए बढ़ते महत्व को देखकर वैश्वीकरण के युग को भारत सरकार ने राष्ट्रीय ज्ञान आयोग का गठन किया। सैम पित्रौदी की अध्यक्षता में यह उम्मीद है कि सिफारिशें आयोग की अंततः गवर्नेस के क्षेत्र में दूरगामी परिवर्तन की सुविधा होगी शिक्षा और अनुसंधान आयोग की अध्यक्ष ने कहा कि हम बीज रोपण कर रहे है कि 20 साल के भीतर परिणाम का उत्पादन होगा, एक ज्ञान अर्थव्यवस्था में, प्ब महत्वपूर्ण माना जाता है। कई कंपनियों की प्रतिस्पर्धा के, चाहे जो उद्योग हों। वह एक ठैप्ए छै में सूचीबद्ध 50 कंपनियों के नमूना ध्यान में रखते हुए चयन कर रहे है ताकि ज्यादातर कंपनियाँ विशाल बौद्धिक पूंजी प्रबंधन के साथ अनुभव भारत के बड़े संगठन है दुनिया के बड़े पैमान में संगठनों को बनाने की क्षमता प्रबंधन श्रृंखला का प्रतिनिधित्व करता है। और यह उद्योगों की आसान निष्कर्ष सामान्यीकरण करने के लिए कार्य कर रही है। इस शोध का उपयोग कर फर्म के बौद्धिक पूंजी का प्रदर्शन प्रबंधन पर केंद्रित वेल्यू एडेड बौद्धिक गुणांक के कारण बहुत लोकप्रिय हो गया है इसकी सीधी गणना, विश्वसनीय लेखापरीक्षित डेटा की उपलब्धता और आसान तुलना, 2004 से सम्बद्ध विभिन्न औद्योगिक क्षेत्रों में यह विधि एक मानकीकृत रूप प्रदान करता है। गणना और विभिन्न क्षेत्रों में प्रदर्शन की तुलना की जाती है। राष्ट्रीय और अंर्तराष्ट्रीय स्तर पर विधि सार्वजनिक रूप से उपलब्ध लेखापरीक्षित जानकारी का उपयोग करता है। आंतरिक और बाहरी वित्तधारको से अधिक विश्वसनीय और अधिक उपयोगी है जो जांच करने के लिए दक्षता फर्म के आधार देखने को बेहतर अंतदृष्टि देता है एक फर्म विभिन्न संसाधनों का उपयोग कर मूल्य निर्माण दक्षता, तथा सूचकांक का उपयोग करती है। इस पत्र से रिलेशन विश्लेषण और दक्षता के आधार पर संगठन की रैकिंग परख होती है। उत्पादकता सूचकांक अध्ययन मात्रात्मक और 2001–02 से 10 साल के आंकड़ो पर आधारित है 2010–11 में कंपनियों के लेखा परीक्षण वार्षिक रिपोर्ट से एकत्रित हुए कम्पनियों के नमूना प्रतिनिधि, जिससे अधिक से अधिक सात औद्योगिक क्षेत्रों को कंव किया। विकसित दुनिया में, व्यापक रूप से अनुसंधान समुदाय द्वारा किया जाता ह। वार्षिक रिपोर्ट 2000 के तहत 250 कम्पनियों के प्रदर्शन का विश्लेषण मापने के लिए इस्तेमाल किया, लंदन स्टॉफ एकसचेंज में 2007 में एक अधीनस्थ उवधारणा का उपयोग किया। ट।प्ब और बौद्धिक पूंजी दक्षता (बर्फ) कंपनियों के प्रदर्शन का विश्लेषण करने के फिनलैंड के 11 सबसे बड़े उद्योगों के कवर प्रकरीकरण से संबंधित है कि अन्य अध्ययनों से थ्ज्ैम् 100 और ै–च 500 कंपनियां विलियम्स(2001) और रॉबर्ट (2000) द्वारा आयोजित किए गये। क्रमशः डेट (2004) गोह (2005), और कामथ (2007) का विश्लेषण करने के लिए ट।प्ब उपयोग, जापानी, मलेशियन और भारतीय बैंको के प्रदर्शन में महत्वपूर्ण खोज के प्रदर्शन में अंतर देखा गया।

डेटा– अनुसंधान बंबई स्टाफ में सूचीबद्ध सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों की वार्षिक रिपोर्ट से डेटा एकत्र अवधि 2010–2011 के लिए 2011–12 के लिए विनिमय, बेहरतीन ढंग से चुनी 50 कम्पनियों के कुछ भारतीय लोगों के बीच सार्वजनिक क्षेत्र के उ़द्यमों और अनुभव जन्य नमूने के रूप में चुने गये हैं। भारतीय सार्वजनिक क्षेत्र का बौद्धिक पूंजी प्रबंधन का उ़द्यम प्रदर्शन निम्न प्रकार है –

ग्रे मॉडल (एक–एक) के लिए विशेष रूप से लागू होता है। के रूप में चिन्हित एक चर ग्रे मॉडल का आदेश भविष्यवाणी, एक–एक मॉडल संबंधो का पता लगाने के लिए प्रणाली के भीतर भिन्न्ता का उपयोग अनुक्रमिका डेटा और भविष्यवाणी मॉडल के बीच स्थापना करता है।

ग्रे सिस्टम के लिए विशिष्ट चिन्ह और विशेषताएँ है।

(1) ग्रे प्रणाली में ग्रे संख्या अधुरी जानकारी के साथ एक संख्या है।

(2) ग्रे तत्व अधूरी जानकारी के साथ एक तत्व का प्रतिनिधित्व करता है।

(3) ग्रे संबंध अधूरी जानकारी के साथ संबंध है।

ग्रे प्रणाली के सिद्धांत के कई चरण है।

1. ग्रे पीढ़ी यह जानकारी पूरक करने के लिए द्वारा प्रोसेसिंग है यह प्रक्रिया करने के उद्देश्य से है एक जो स्पष्ट नियम है, उसे हासिल करने के लिए उन जटिल ओर थकाऊ डेटा संख्याओं के अनुसार डाटा प्रोसेसिंग के सिद्धांत प्रत्येक प्रभाव कारक के लिए उम्मीद लक्ष्य के आधार पर निर्धारित किया जाता है।
2. ग्रे मॉडलिंगः भिन्नता का एक सेट स्थापित करने के लिए किया जाता है। जो समीकरण और ग्रे समीकरणों अंतर है।
3. ग्रे भविष्यवाणीः– कहा जाता है जो एक गुणात्मक भविष्यवाणी संचालन करने के लिए ग्रे मॉडल का उपयोग करता है। विकास के विषय में ग्रे मॉडल एक समय श्रृंखला के भविष्य के मूल्यों की भविष्यवाणी सबसे हाल के डेटा का एक सेट पर आधारित है।
4. ग्रे निर्णयः– एक निर्णय अपूर्ण और अस्पष्ट स्थिति के तहत किया जाता है, यह ग्रे रणनीति के साथ मुख्य रूप से संबंधित है। यह प्रभाव उपाय के माध्यम से एक संतोषजनक रणनीति बनाने के लिए महत्वपूर्ण है।
5. ग्रे रिलेशनल विश्लेषणः– विभिन्न कारकों और उनके रिश्ते के सभी प्रभावो कारक संबंध है यह ग्रे प्रणाली से जानकारी का उपयोग करता है।
6. ग्रे नियंत्रणः– प्रणाली व्यवहार के डेटा पर काम और व्यवहार के किसी भी नियम के लिए देखो भविष्य के व्यवहार की भविष्यवाणी करने के लिए विकास, भविष्यवाणी मूल्य में वापस लिया जा सकता है।

ग्रे रिलेशनल विश्लेषण गतिशील रूप से प्रत्येक की तुलना करने के लिए ग्रे प्रणाली से जानकारी का उपयोग करता है। सूचीबद्ध कंपनियो की संख्या रहने और प्रभाव कारकों की संख्या में छ हो तब मैट्रिक्स कहा जाता है मूल्य मैट्रिक्स की स्थापना की है।

निष्कर्षः–

IC के नजरिये से BSE के प्रदर्शन का विश्लेषण करने के लिए एक अग्रणी प्रयास के रूप में, इस पत्र भारतीय कॉरपोरेट क्षेत्र में भविष्य के अनुसंधान के लिए संदर्भ का एक अच्छा स्त्रोत्र है। अध्ययन मजबूत सेद्धांतिक नीव और अनुसंधान (के लिए संदर्भ का स्त्रोत है।) सिद्ध पद्धति पर आधारित है। डेटा इस अध्ययन में उपयोग भी योग्य एकाउंटेंट द्वारा तैयार और संवैधानिक द्वारा लेखा परीक्षण है। लेखा परीक्षकों की, इस प्रकार बढ़ती विश्वसनीयता इसके अतिरिक्त इस अध्ययन मौजूदा करने के लिए योगदान है।

संदर्भः–

1. अबेसकेरा आई (2007) विकासशील और विकसित के बीच बौद्धिक पूंजी रिपोटिंग राष्ट्र पत्रिका बौद्धिक पूंजी, 8(2), 329–345
2. बोनटिस, एन क्यू रिचर्डसन, एस (2000) बौद्धिक पूंजी और व्यापार पदर्शन मंलेशियन इंडस्ट्रीज बौद्धिक पूंजी 1 पत्रिका (1) 85–100
3. बोर्नमन एम. (1999) विधि के अनुसार मूल्य प्रणाली को संभावित इंटरनेश्नल जर्नल प्रौद्योगिकी प्रबंधन, 18, 463–475
4. बोजबूरा एफ.टी. (2004) मापन और तुर्की में बौद्धिक पूंजी के आवेदन शिक्षा संगठन, 11(4/5), 357–367
5. चेन एम.चैंग एस. हांग, वाई (2005) के बीच संबंधो का एक अनुभवजन्य जांच बौद्धिक पूंजी और फर्म के बाजार मूल्य और वित्तीय प्रदर्शन बौद्धिक के जर्नल पूंजी वॉल्यूम 6(2), 159–176